Title**: POTTER'S HOUSE**
preached by Dr. w euGENE SCOTT, PhD. Stanford University
At the Los Angeles University Cathedral
Copyright (c) 2007, Pastor Melissa Scott - all rights reserved

शीर्षक : **कुम्हार का घर**
डॉ. डब्लयू. यूजीन स्काट, विशारध, स्टैनफोर्ड विश्व विध्यालय,
द्वारा लासऐंजलस के गिरजाघर में उपदेश दिया गया
अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित

POTTERS HOUSE

कुम्हार का घर

मैं वह उपदेश नहीं दूँगा जो मैं तैयार कर के आया था। परमेश्वर ने मेरे दिल से बात करी है और मैं इस भीतरी आवाज को मानूँगा और उस जगाह जाऊँगा जहाँ इस से पहले भी कई बार मैं इस कलीसीया के साथ जा चुका हुँ, जहाँ परमेश्वर चाहता है की आज हम जायें - यिर्मयाह १८।

"यहोवा की ओर से यह वचन यिर्मयाह के पास पहुँचाः 'उठ, और कुम्हार के घर जा, और वहाँ मैं तुझे अपने वचन सुनाऊँगा।' इसलिये मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखा की वह चाक पर कुछ बना रहा है।" मैं ने अपनी सारी बाईबल के किनारी पर जी. कैंम्पबैल मौर्गन का अनुवाद लिखा हैः "वह अपना काम चाक पर कर रहा था।" "जो मिट्टी का बर्तन वह बना रहा था, वह बिगड गया, तब उसने उसी का दूसरा बर्तन अपनी समझ के अनुसार बना दिया।" मोर्गन के अनुवाद का प्रमाणीकरण यह हैः चाहे मौलिक काम में साफाई हो या नहीं, यह बात तो साफ है की यह बेतुका नहीं है, काम का खुल कर प्रदर्शनः यह उद्देश्यपूर्ण काम है - "कुम्हार अपना काम चाक पर कर रहा था" - क्योंकि जब मिट्टी कुम्हार के हाथ से नष्ट होती है ... "जो मिट्टी का बर्तन वह बना रहा था, वह बिगड गया, तब उसने उसी का दूसरा बर्तन अपनी समझ के अनुसार बना दिया।"

छटवीं आयत में यह बात साफ है की यहाँ पर मनुष्य - परमेश्वर का रिश्ता है। "यहोवा की यह वाणी है की इस कुम्हार के समान तुम्हारे साथ क्या मैं बी काम नहीं कर सकता? देख, जैसे मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तुम बी मेरे हाथ में हो।" मैंने इस अध्याय पर सैकडों बार उपदेश दिये होंगे, परन्तु जैसा की परमेश्वर के अनेकों सच के साथ होता है, इसे भी पहचानना है।

१७२७ में पछत्तर जर्मनी के मसीही प्रार्थना कर रहे थे और परमेश्वर को खोज रहे थे, और पवित्रात्मा उन पर उतर आया और मोरेवियन पुनरुत्थान प्रारंम्भ हुआ। उन ७५ जर्मनी मसीहों ने इतने कम समय में इतना अधिक धर्म प्रचार किया की सारी कलीसीयाँओं ने २०० वर्षों में न किया था। काऊँट जिनजिनडार्फ, उन के और उनके कार्यों के बारे में लिखते हैं।

उनके जीवनों ने चार्ल्स और जॉनवैसली को छुआ। चार्ल्स ने परमेश्वर के प्रती निष्ठा को गहराई से अनुभव किया, और वह और जॉन - जो एक मिध्यावादी अंग्रेजी प्रचारक है, दोनों अटलानटिक महासागर में जहाज पर सवार थे, जब एक तूफान ने उन्हें आ घेरा, जिस से नाविक डर गये। क्वल मोरवी लोग थे जो नहीं डरे थे - मोरवी मसीहों का एक चोटा दल। जॉन उन के पास गया। वे प्रार्थना नहीं कर रहे थे - वे गाना गा रहे थे। उस ने उन से पूछा, "आप प्रार्थना क्यों नहीं कर रहे हैं?" उन्होंने कहा, "यदी यह परमेश्वर की इच्छा है की हम इस तूफान में मारे जायें, तो हम उसकी महिमा में तुरन्त प्रवेश पायेंगे; और हम यही चाहते हैं।" जॉन उन के मुखिया से बात करने लगा, यह जानने के लिये की उन के पास क्या है; उसे वह चाहिये था जो चार्ल्स पहले ही परमेश्वर से पा चुका था और इन के पास भी था, और उन के मुखिया ने कहा, "यह अनुग्रह है।"

जॉन ने कहा, 'मेरे पास यह नहीं है। क्या मुझे प्रचार करना छोड देना चाहिये?" और मोरवीयों के अती बुद्धिमान मुखिये ने कहा, "नहीं, अनुग्रह के बारे में प्रचार करो, क्योंकी यह बाईबल में है। जब तुम इसे पा लोगे, तो तब भी इस के बारे में प्रचार करना, क्योंकी तब यह तुम में होगा: परन्तु पहले इस का प्रचार करो क्योंकी यह वचन में है।"

जितना मैं बूढा होता जाता हुँ और परमेश्वर की सेवा करता हुँ, उतना ही मैं यह पहचानता हुँ की परमेश्वर इतना दयालू है की वह मुजे अपने वचन का परिज्ञान देता है। कई बातें ऐसा हैं जिन के बारे में मैंने उस के वचन में से प्रचार किया है, जिन के बारे में मैं सोचता था की मैं सब जानता हुँ, परन्तु अब मुझे पता चला की मैंने केवल उन को छुआ था और उनकी केवल एक झलक देखी थी। और जैसे की परमेश्वर के साथ जीवन संयुक्कता की सच्चाई बताता है, जब तक सच भीतर बड नहीं जाता, आप उन्हें पहचान नहीं पाते। इसलिये कई बार जो वचन आप सैकडों बार पढ चुके हैं, आपकी मसीही यात्रा में जैसे की कार्ल बार्त कहते हैं, "लपक कर पशु की तरह तुम्हें पकड लेगा," क्योंकी वे स्थिती के अनुकूल अर्थ बताते हैं और अनुभव के द्वारा विर्देश देते हैं।

मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने कुम्हार के घर के बारे में पहले प्रचार ही नहीं किया हो, क्योंकी परमेश्वर ने नये सच को संयुक्त किया है। मैं आशा करता हुँ की यह आप तक पहुँचेगा क्योंकी मेरी कभी यह इच्छा नहीं रही है की मैं केवल उपदेश दूँ। "सरमन" (उपदेश) शब्द, प्राचीन रोम की भाषा में 'सरमो' से लिया गया है। यूहन्ना की इंजील प्रारंम्भ होती है: "आदी में सरमो था, और सरमो परमेश्वर के साथ था और सरमो परमेश्वर था।" "उपदेश" एक ही है और वह तब है जब परमेश्वर का जीवन मसीह में बताया जाता है और आप वह "दूसरी आवाज" सुनते हैं और आप प्रचारक को भूल जाते हैं। मैं चाहता हुँ की यह आज पूरा है।

मैं नहीं चाहता की परमेश्वर के वचन से किसी भी प्रकार हटा जाये और परमेश्वर हम में से हर एक के साथ आज बात करे। यदी अब तक आप ने नहीं लिखा है तो मैं चाहता हुँ की आप चार शब्द

अपनी बाईबल की किनारी में लिख लें क्योंकी इन चार शब्दों को मैंने इस तरह टाँग रखा है की आप जब चाहें उन्हें ले सकते हैं। प्रचार बहुत अधिक है वह ऐसा है जैसे की बीज बोने वाले के दृष्टाँत में बताया गया है की कुछ बीज मार्ग में डले। हम में केवल एक ही उपदेश से कोल्हाहल मच जाता है, और अब ऐक और उपदेश आ गया और यह और भी कोल्हाहल मचा देगा, परन्तु भीतर कुछ नहीं जाता।

जब परमेश्वर का वचन आत्मा से अभिषिक्त हो कर आता है तो वह भीतर प्रवेश करता है। जब पतरस ने पेंटीकोस्ट के दिन प्रचार किया, तो वह ठ्ठा करने वालों के लिये कहता है की "उन के मन में चुब गया और उन्होंने कहा, "हमें मुक्ति पाने के लिये क्या करना चाहिये?"

और अब, "यहोवा का वचन यिर्मयाह के पास पहुँचा," और मैं चाहता हुँ की १८वें अध्याय के किनारे ये चार शब्द लिख लियये जायें: "सिद्धांत"... "उद्देश्य" ... "कार्य" ... "व्यक्ति"। जिन शक्तिशाली मनुष्यों के साथ परमेश्वर ने काम किया - और यह मेरे लिये बहुत महत्व रखता है, जिन शक्तिशाली मनुष्यों के साथ परमेश्वर ने काम किया, उस ने उन्हें कुम्हार के घर का सबक सीखने के लिये मजबूर किया। और उसनेउन्हें यह सीखने के लिये इसलिये मजबीर किया की वे जान लें की परमेश्वर अपने लोगों के साथ इसी तरह व्यवहार करता है।

शारीरिक रूप से यिर्मयाह से पुष्ट व्यक्ति और कोई नहीं होगा। कमर तक मिट्टी और कीचड के गडहे में बंद रहना वह भी केवल इसलिये की परमेश्वर के वचन का प्रचार किया; और यह जानते हुए की बुरा होगा, वह परमेश्वर में अपने विश्वास को मानता है और भेंट भेज कर परिस्थितीयों को ठुकराता है - ऐसे जैसे की परमेश्वर - केवल परमेश्वर का उस पर नियंत्रण है, चाहे जो परिस्थिती क्यों न हो। वह पुष्ट था।

जकर्याह, आग की वह लपट थी जिस से परमेश्वर के लोग, बंदूआ से छूट कर पिर से मंदिर बनाने में लग गये। वह पुष्ट ता। जब सब काम छोड देना चाह रहे थे, तब हाग्गै - एक बूढा व्यक्ति, और जकर्याह - एक जवान व्यक्ति ने मिल कर उन्हें फिर से काम पर लगाया। परमेश्वर उसे कुम्हार के घर ले गया।

ये नियम में पौलुस से पुष्ट और कोई नहीं है। जो उस ने सहा, मैं वह एक दिन बी नहीं सह सकता हुँ। फिर बी इन सब बातों ने उसे धीमा नहीं किया। परमेश्वर उसे कुम्हार के घर ले गया। यशायाह, जब सब ने परमेश्वर को त्याग दिया छोड दिया था, और होशे की मृत्यु के बाद तब यशायाह ने परमेश्वर को एक सिंहासन पर बैठे देखा।

ये वे पुरुष हैं जिन्होंने निर्देश दिया - उनकी लगन, उनका संकल्प, उनकी इच्छाशक्ति, उनकी योग्यतायें - उनकी प्रतिभा की ओर। वे जहाँ कहीं जाते थे, एक छाप छोड जाते थे। परमेश्वर ने ुन्हें चुना। परन्तु इस से पहले की वह उनका भरपूर प्रयोग करता, उन्हें कुम्हार के घर का पाठ सीखना था। आप कुम्हार के गर का उपदेश ले कर उन स्त्रीयों और पुरुषों पर लागू करीये जो परमेश्वर की ओर आकर्शित होते हैं ... आज और यह बेसुरे गीत की तरह कर्कश लगेंगे ... क्योकी परमेश्वर को बंद कर

रखा गया है (उन्हें ऐसा नहीं कहा जाता), परमेश्वर बंद है, जहाँ उन्हें प्रति दिन नया सुर चाहिये, जहाँ मनुष्य स्विकार करेगा - जैसे की महिमा का परमेश्वर काँपते हुए स्विकार करने का इंतजार कर रहा हो, की कब मनुष्य परमेश्वर को स्विकार करेगा।

कुम्हार का घर यबबदल देता है और सब सही कर देता है और पुष्ट से पुष्ट व्यक्ति जिन के साथ परमेश्वर ने काम किया, उन को यह सिद्धांत सीखना पडा, इस से मुझे कुछ याद आता है। और हमारी इच्छा और हमारी लगातार कोशिश यह जानने के लिये की "परमेश्वर की इच्छा" क्या है - वैसे होता ऐसा है की हम कोशिश करते हैं परमेश्वर हमारी इच्छा को स्विकार करे। और कुछ लोग जिसे संघर्श और व्याकुल्ता कहते हैं, वह यही है। हम चाहते हैं की परमेश्वर हमारी इच्छा को पूरा करे या अपनी इच्छा को थोडा बदल दे ताकी परमेश्वर हमें और हमारी अवश्यक्ताओं को स्वीकार करे। कुम्हार का घर इसे स्थापित करता है।

मैं सारे संसार में कुम्हार के घर गया। मैंने कई वर्षों तक इस अध्याय पर प्रचार किया है। मैंने एक आदत बना ली थी की मैं जहाँ भी जाऊँ, चाहे वह कोलंमबिया हो या बोलीविया या कलकत्ता, मैं कुम्हार का घर खोज लेता था। वे सब एक से हैं। एक कुम्हार है, मिट्टी है और चक्का है। यही तत्व हैं। मिट्टी की चिकनाई अलग हो सकती है, रंग अलग हो सकता है, परन्तु हमेशा, कुम्हार, मिट्टी और चक्का होते हैं। देखते हुए आप को यह आभास होता है की मिट्टी का कोई अधिकार नहीं है। सिद्धांत यह है - क्योंकी इस दृष्टांत में परमेश्वर कुम्हार है: कुम्हार होने के नाते परमेश्वर कुछ भी कर सकता है; उसको पूरा अधिकार है की वह अपनी मिट्टी को अपनी इच्छा के अनुसार रूप दे।

एक पुष्ट व्यक्ति - यशायाह ने वाक्यखण्ड को चित्रों के द्वारा बताया। यशायाह के एक अंश में वह हास्यकर करता है। वह कहता है, "क्या मिट्टी कुम्हार से पूछती है की वह क्या बना रहा है" ... "तुम मेरे साथ क्या कर रहे हो? तुम मुझे क्या आकार दे रहे हो? यह घुमाना और आकार देना और कुंदलना थोडी देर के लिये रोक दो। हमें कुछ बात कर लेनी चाहिये; मुझे पता लगाने दो की तुम मेरे साथ क्या बनाने जा रहे हो, क्योंकी हो सकता है की मुझे वह बनना पसन्द न हो" - "क्या मिट्टी कुम्हार से पूछती है की वह क्या बना रहा है" बकवास! परमेश्वर को पूरा अधिकार है।

आप ने मुझे इस विषय पर प्रचार करते सुना है। मैंने सुना है की 'पाप' को मोटर गाडी से ले कर आप के कपडे की सिलाई तक कहा गया है। ओरोविल्ले में, जब मेरे पापा फ्री पेंटीकोस्ट चर्च जोते थे तो उन से कहा जोता था की यदी वे टाई उतारेंगे तो ही वे अभिषिक्त के नीचे उपदेश दे पायेंगे। मैंने हर वस्तु को 'पाप' कहते सुना है। यह एक जड से आता है। यशायाह ने कहा है: "हम भेडों की नाई तिथर बिथर हो गये हैं; हम मे से हर एक जन अपने ही मार्ग पर चल रहा है।"

आप यह मत समझीये की क्योंकी आप गिरजाघर में हैं यह बदल जायेगा। आप यह भी सोजीये की क्योंकी आप ने परमेश्वर के साथ अनुभव किया है, तो यह एक दम से ठीक हो जायेगा। मैंने देखा है की गिरजाघर में बैठे लोग अपने मार्ग पर अधिक चलते हैं, बजाये उन सब पापीयों के जिन्हें मैं अपने

जीवन में मिला हुँ; और वे सब से बुरे हैं क्योंकी वे शिकार करते रहते हैं और निशाना लगाते रहते हैं, जब तक उन के कार्यों को समर्थन देने वाला वचन नहीं मिल जाता।

पाप, इच्छा में जड पकडे हुए है की मैं जो चाहूँ वह करूँगा; और यह जड वह पाप को जन्म देती है जिस से परमेश्वर घृणा करता है। हमारी इच्छा पाप करना नहीं है, परन्तु, "हम दुष्ट हैं," जैसे पौलुस ने कहा, "धोखा देने की इच्छा के अनुसार।" और दुष्टता राजद्रोह उत्पन्न होता है। इस पाप से व्यवहार करना परमेश्वर के लिये परेशानी है। हम एक सीमा पार कर चुके हैं। अब हमें केवल हमारी इच्छा नहीं चाहिये। हम उस के प्रती रोजद्रोही हो गये हैं, जो इसे रोकना चाहता है।

यह घोडे के समान है, जिसे आप पालतु नहीं बना सके, और आप लगाम को उसके दातों में फँसा नहीं पा रहे। मेरे पास एक घोडा था। मेरे रिश्ते के एक भाई ने उसे प्रशिक्षण दिया - इस से तेज दौडने वाला घोडा मैंने पहले कभी नहीं देखा, वह हर दौड जीतता था। मेरे भाई ने उसे सिखाया था की जब घुटनों को सिकोडेंगे, तब उसे भागना है। जब आप सब से पहले घोडे पर चढते हैं, तो आप अपने घुटनों को सिकोडते हैं। मैं जब पहली बार घोडे पर चढा, मैंने अपने घुटनों को सिकोडा और मेरे नीचे घोडे के बजाये हवा थी। वह जा चुका था। यह राजद्रोही है.... जब उस घोडे को दातों में लगाम नहीं लग पाई।

कुम्हार का घर सिखाता है, और मैं सीखना चाहूँगा। मुझे लगा मैं सीख चुका हुँ, परन्तु मैं सच में साखना चाहता हुँ। परमेश्वर के पास एक प्रायोजन है, और उस ने अपने बेटे को मरने के लिये नहीं भेजा और न ही "फुटकर सस्ते अनुग्रह" के लिये, जैसे की टोजर कहते हैं - हाथ में टोपी पकडे लोगों के मनों के दर्वाजे पर इस उम्मीद से खडे रहना की वे उस को देख हाथ हिलायेंगे। परमेश्वर ने स्वर्ग में रिक्त स्थान को भरना चाहा - जिसे लुसीफर ने खाली कर दिया था, जब उसे नीचे फैंका गया।

इस महा प्रलय पर चिंता जताते हुए, उस ने कहा, "हम मनुष्य को अपने स्वरीप में बनायेंगे;" और उसने मनुष्य को एक उद्देश्य से बनाया। जैसे की नीबर ने कहा, उस उद्देश्य में यह भी था की, "हम में परमेश्वर के स्वरूप का एक स्वदेशी गुण भी है।" परमेश्वर के स्वरूप का निष्कर्श ही स्वंय निश्चय उत्पादक योग्यता है; परमेश्वर के इस स्वतंत्र विचार के कारण ही हम कहते हैः "जय मसीह की!" ... प्यूरीटनों की तरह नहीं, जो कहते हैं, "परमेश्वर को परमेश्वर बने रहने के लिये अच्छा होना चाहिये।"

परमेश्वर को परमेश्वर बने रहने के लिये सर्वशक्तिमान होना चाहिये। उसे अच्छा होने की आवश्यक्ता नहींः वह अच्छा है। पूर्ण शक्ति के साथ उसने स्वंय को साबित कर दिया है और स्वंय को विश्वासनीय और अच्छा बताया है। उस ने यह सब हमारे अंदर डाला है; उसने हमें अपने स्वरूप में बनाया, उस थोडी योग्यता के साथ जो हारे अंदर है वह हमारी उस स्वतंत्रता को बिगाड सकता है, यदी हम वह चुनते हैं जो वह नहीं चाहता की हम करें। यह उतना बेवकुफी भरा है जितना की चींटी का एक रेल के इंजन से वारतालाप करना, परन्तु परमेश्वर कोई मशीन नहीं बना रहा था। उसे अपने प्रीय बेटे के जैसे और भी बेटे चाहिये; और उस ने मनुष्य में स्वतंत्रता की वह योग्यता डाली जो की प्रभुता का सार

है। मनुष्य ने उस का गलत प्रयोग किया - वह गलत प्रयोग करता आ रहा है, और यही पाप की जड है।

परमेश्वर की अच्छा और हमारी अवस्यक्ता के बीच चुनना हो तो, मेरे और आप के जीवन में यह अनिवार्य अध्याय लिखा गया है: "हम सब भेडों की नाई भटक गये हैं; हम सब अपने ही रास्तों पर चलने लगे हैं।"

वे वस्तुऐं जिन्हें हम पाप कहते हैं - वह सूचीपत्र, जिसे काटा भी जा सकता है, और आदतों के अनुसार, मैं शहर का सब से पवित्र व्यक्ती बन जाऊँगा - यदी आप जड को संम्भाल नहीं सके तो. परमेश्वर हृदय को देखता है और पाप: "मुझे अपना मार्ग चाहिये।" कुम्हार का घर हमें यह सिखाता है की परमेश्वर के घर में केवल एक ही बात राज करेगी क्योंकी कुमहार का घर परमेश्वर का घर है। उसे ऐसा मिट्टी चाहिये जो वार्तालाप नहीं करती; उसे ऐसा मिट्टी चाहिये जो उसके हाथों में रहे; उसे ऐसा मिट्टी चाहिये जो उसे अधीन हो।

पिछले की स्पताह के उपदेश देखीये। भजन संहिता ८४, परमेश्वर की उपस्थिती में प्रवेश करने का मार्ग जहाँ सेनाओं का परमेश्वर खडा रहता है ... वेदी के पास। वेदी के पास, मृत्यु होती है और परमेश्वर के अधिकारों को पहचानते हैं। कुम्हार के घर का सिद्धांत हम में देकने की क्षमता डालता है, जो भी हम ने देखा है, परमेश्वर के गध्य से ले कर। मैं आप को ऐसा नहीं करा सकता। जैसा की पिछले स्पताह प्रचार किया गया, जब तक की परमेश्वर का वचन हम में वह हथियार तेज करने वाला यंत्र नहीं ढूँढ लेता - जो की उसकी छवी का तत्व है - वह जड नहीं पकड सकता। यदी हमारा पाप इतना द्रोही हो गया है की हम उसे उछाल देते हैं और अपने पर लागू नहीं करते ... (क्यों मैं स्वंय को पहले उपदेश देता हुँ; आप ने कभी बी ऐसा उपदेश नहीं सुना होगा जो पहले जीन स्कॉट ने नहीं सुना। जब हम उस ओर जाते हैं जो मैं समझता हुँ की परमेश्वर मेरे लिया कर रहा है और वह इस कलीसीया के लिये भी करेगा, तो मैं यह बात साफ कर दूँ।)

मेरे पहले की कुछ बातें ठीक नहीं लगेंगी। मैं नहीं चाहता की हम आत्मा से प्रारंम्भ करें और शारीर में अंत करें, और अपनी स्वंय की आत्मा के घमण्ड में रहें और निर्णय कर लें की परमेश्वर यही चाहता है। मैं नहीं जानता की परमेश्वर क्या करता था यदी मैं "उस पर प्रार्थना नहीं करता था।" केवल एक ही मालिक है - परमेश्वर। यही सिद्धांत है।

वह क्या चाहता है? क्योंकी यह मेरी आवश्यक्ताओं और उसकी इच्छा के बीच में चुनने की बात है, वह क्या चाहता है? परमेस्वर अपनी इच्छा से कभी हटा नहीं है। यह दूसरा शब्द है: "इच्छा"। परमेस्वर वह कुम्हार नहीं है जो अपनी कला को बदलते रहता है। जब उसने मनुष्य को बनाया तो उसने क्या कह? मेरे साथ कहीये, "हम मनुष्य को अपने स्वरूप में बनायेंगे।" परमेश्वर कोई नौकर नहीं है की घण्टी बजाने पर दौडा चला आये। वह सेवक बी नहीं है। वह खानसामा भी नहीं है। वह बैंक में काम करने वाला भी नहीं है। वह पकाने वाला भी नहीं है। वह सिखाने वाला भी नहीं है।

सब से पहले वह एक कुम्हार है जिस का मकसद यह है की वह मिट्टी का पुलन्दा ले और उसे एक आकार दे। हमारे साथ उसकी समस्या यह है ... हमारे पास इस मिट्टी में कई प्रयोजन हैं। और जब परमेश्वर की आत्मा आती है, नये नियम के लेखक इस परमेश्वर की आत्मा के विषय में कहते हैं, "हमारे पास यह बहुमूल्य वस्तू मिट्टी के बर्तनों में है।"

परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, उसने अपनी रूपरेखा उस में डाली, उसके साथ चला और बातें की; और वह अपनी मासूमियत में परमेश्वर के साथ चल सकता था। मनुष्य ने इसे उडा दिया। परमेश्वर ने कहा, "पाप का दण्ड तो मृत्यु है।" परमेश्वर को मनुष्य से जो समस्या थी वह यह की पवित्रता की जो दीवार थी वह मनुष्य और परमेश्वर के बीच आ गयी थी - जब मनुष्य ने पाप किया। भेड की तरह वह अपना मार्ग खोज रहे थे। उन्हें वह वृक्ष और उसका फल चाहिये था, और एक दिवार खडी हो गयी।

इफिसियों की पत्रि कहती है की परमेश्वर ने वह दिवार तोड दी। और उसका अपना बेटा - जो परमेश्वर के लिये बहुत ही बेशकीमत है, स्वर्ग की महिमा को छोड कर आया, उसे जो चाहिये था उसे छोडा - और प्रार्थना करी, "पिता, यदी संम्भव हो तो यह प्याला मेरे पास से हट जाये, परन्तु मेरी नहीं परन्तु तेरी इच्छा पूरी हो।" और कलवरी पर अपनी जान दे दी और हम सब के पापों को अपने उपर ले लिया, और बिचोला बन कर हर एक के पाप का रिण चुकाया - भूतकाल, वर्तमान और भविष्यकाल का - केवल इसलिये नहीं की हम स्वर्ग जा सकें - और बादलों पर पंख फडफडाते हुए उडें ... एक वीणा बजायें ... और सोने की सडकों पर चलें। परन्तु इसलिये की वह अपना हाथों से, कुम्हार की तरह से बर्तन के बिगड जाने पर दूसरा बर्तन ना बनाये।

मुक्ति - यूनानी में 'सोटेरीयन' कहते हैं, यह लगातार काम है। मैंने पिछली रात फिलिप्पियों के पर्ब के बारे में बताया था: हमें "कार्य करना है" यानी "क्रम को पूरा करना है", हमारी मुक्ति। मुक्ति के लिये कार्य नहीं करना है। मसीह में मुक्ति पा चुके हैं, एब हमें उस क्रम को पीरा करना है; हमें अपने आप को टाँगे रखना है। अगर दूसरी तरह से देखें तो। दिवार टूट गयी ताकी परमेश्वर नीचे पहुँच सके और हमें पकड सके और विचार कर सके, पौलुस के शब्दों का प्रयोग यदी करें तो, यह मिट्टी का पुलंदा - उसकी आत्मा को इस में डाल कर आकार देना।

परमेश्वर को इस से कोी मतलब नहीं की जेनी स्कॉट कितना अच्छा प्रचारक है। उस इस से कोई मतलब नहीं की इस शहर के लोग देखते हैं की इस इमारत से कितनी भीड निकल कर जाती है। परमेश्वर को केवल एक चीज चाहिये। वह हम सब में एकता है। वह चाहता है की हम सब में उसकी छवी दिखाई दे।

पिछले रविवार को जो मैंने दोहरी छवी के बारे में प्रचार किया था वह बताना चाहूँगा - एक तरफ छोटा सा कबूतर जिस से पवित्रात्मा मिलती है और एक तरफ वह काली चिडिया जो शरीर और उसकी इच्छायें हैं जिस से बुरी आलौकिक शक्तियाँ जुडती है - नरक का कौआ। परमेश्वर चाहता है की हम में स्वभाव पैदा हो जो उसकी आत्मा से मिल कर परमेश्वर की छवी को पैदा करे। वह बस यही चाहता है। वह गंदगी और बाकी सब हातों को बहार करना चाहता है। परमेश्वर की पुस्तक का हर वचन

यही कहता है।

आप "वाचा के संदूकों" के बारे में मेरा अभिप्राय जानते हैं।आप जानते हैं की यदी उन से मदद मिलती है तो उन का प्रयोग करें। परन्तु जैसा की फौलेट कहते हैं, एक अकेला वचन खोलें और उसे पढ कर परमेश्वर के उपर से उसे अठा कर इस तरह मारें और कहें, "मुझे यह मिला। अब आप इसे करना नहीं चाहते हैं, परमेश्वर पर मैंने आप को पकड लिया। अब आप करीये।" रोमियों ८:२८ इन संदूकों के बारे में कहता है: "जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं, अर्थात उन्हीे के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये हुए हैं।" यूनानी में, "परमेश्वर हर वस्तु में प्रवेश करता है," हमारे हटीले स्वभाव से उत्पन्न परेशानीयाँ भी शामिल हैं। "परमेश्वर हर वस्तु में प्रवेश करता है,"

कई लोग परिस्थितीयों का गलत अर्थ बताने के आदी हैं। वे हर जगाह पर यह कहते सुनाई पडते हैं की वे जानते हैं की परमेश्वर क्या करने जा रहा है। हम अपनी गडबडी खुद करते हैं, परन्तु उसे आशाहीन नहीं बनाते। यूनानी में रोमियों ८:२८ में, "परमेश्वर हर वस्तु में प्रवेश करता है।" हर स्थिती जो उसकी इच्छा अनुसार बिगडी है, परमेश्वर उस में उस तरह प्रवेश करता है जैसे की कुम्हार के हाथ में बिगडा हुआ बर्तन। "वह उन वस्तुओं में प्रवेश होता है जो अच्छा कार्य करती हैं जो उस के उद्देश्य से बुलाये गये हैं।"

उस की "अच्छाई" क्या है? मुझे अमीर बनाना नहीं, मैंने कहा। वह हमारे लिये केवल बैंक में काम करने वाला नहीं बनेगा - केवल मेरी इच्छाओं को पूरा करने के लिये नहीं है। उसका "अच्छा" २९वीं आयत है। काश मेरे पास पैसे होते और मैं संसार के सभी प्रतिज्ञा के संदूक खरीद लेता, उन में से रोमियों ८:२८ को निकालता - कदाचित वे उसमें उसके साथ २९वीं आयत न डाल दें, क्योंकी २९वीं आयत बताती है की "अच्छा" क्या है। उन दोनों का सार यह है: "वह हर वस्तु में प्रवेश करता है और उन में अपनी अच्छाई का कार्य करता है जिन्हें पहले से उसकी इच्छा अनुसार बुलाया गया है," और जो उसकी अच्छाई है... ताकी हम सब "उसके पुत्र के स्वरूप में हों।"

कई लोग कहते हैं, "परमेश्वर यह होने दे रहा है।" हम कई बार भटक जाते हैं और यह होता है। परमेश्वर ने हमें तालों के गुच्छे की तरह ऐंठ कर नहीं रखा है, क्योंकी जो वह चाहता है वह यह है की "इच्छा" आत्मसमर्पन कर ले और पसन्द स्वतंत्रता से करी जाये - जिस के बिना प्रेम नहीं जताया जाता। सो हम बिगाड देते हैं। फिर वही बूडी अडियल भेड के स्वभाव वापस आ जाता है, और हम अपना मार्ग स्वंय खोजते हैं। अब परमेश्वर प्रवेश करता है। प्रारंम्भ से उसकी एक ही इच्छा है। वह इच्छा यह है की हमें अपने स्वरूप में बनायें; और वह उस समय आकार देना प्रारंम्भ करता है जब हम अपनी इच्छा का आत्मसमर्पण करते हैं ताकी वह स्थिती उसकी इच्छा को आगे बढाये, जो की एक एक कर के तुम्हारे साथ और मेरे साथ होता है की वह हमें अपने जैसा बनाये। समय।

जो इफिसिटों की प्त्री के बारे में मैं बता रहा था वह हमारे और परमेश्वर के बाच में दीवार को बताती है। परमेश्वर ने अनुग्रह कर के अपने बेटे को दिया, ताकी दीवार टूट सके, और अब हम उस की आत्मा के द्वारा परमेश्वर के निवास स्थान बन गये हैं। और अब हमारे पास "मिट्टी के बर्तन में खजाना है।" और जैसे की परमेश्वर का तत्व पत्थर में से निकल कर एक बंद दरवाजे से होते हुए महिमा की ओर पहुँच गया; यह स्वभाव - यूनानी में हुपोसेटैसिस कहते हैं, यह परमेस्वर के स्वभाव का सार है - अब हमारे साथ आ कर मिलता है और मेरे बीतर घुसता है और मेरे उस स्वभाव की ओर जो परमेश्वर की छवी है और जो उस को स्विकार करता है, वह जड पकड लेता है। और क्योकी दीवार टूटी है ताकी उसकी आत्मा प्रवेश कर सके, हम उस की आत्मा के द्वारा परमेश्वर के निवास स्थान बन गये हैं।

क्या इस का अर्थ यह है की मुझ में जो "बूडा आदमी", कौआ था, वह चला गया? नहीं, वह अभी भी है। इसलिये पौलुस कहता है की "उसे प्रति दिन सूली पर चढाओ।" क्या इस का यह अर्थ है की क्योंकी वह आ गया है इस कारण अब सब ठीक है। परमेश्वर का कार्य समाप्त हो गया, अब मुझे वह करने दो जो मैं करना चाहता हुँ? पौलुस प्रार्थना करता है की वे उसकी ऊँचाई, गहराई और चोढाई नापें जो उन्हें परमेश्वर में प्राप्त होता है। और वह उन सिद्ध पुरुषों से कहता है जिन्होमने अपनी देह को परमेश्वर की आत्मा का निवास स्थान बनाया है: "परमेश्वर ने कुछ चेलों..., भविस्यवक्ताओं..., प्रचारकों..., पादरीयों और शिक्षकों..., को दिया, ताकी सिद्ध पुरुष पूर्ण हो जायें...।" वचन वही है जिस का अर्थ "उद्देश्य का पूरा होना" है। और "सिद्द पुरुषों का पूर्ण होना" उन के द्वारा होता है जो धर्म प्रचारक कलीसीया में "विश्वास में एकता" लाते हैं, जब तक हमारे विभिन्न विचार... एक चरित्र में बदल जाते हैं ताकी "हम सब पूर्ण मनुष्य का ज्ञान पाराप्त कर सकें।"

और हम नहीं जान पाते की वह पूर्ण मनुष्य कौन है। "वचन .... परमेश्वर के साथ था" - वही तातपर्य के साथ जैसे परमेश्वर, "और वह वचन देहदारी हुआ और वह हमारे बीच में डेरा किया।"और यूहन्ना १:१८ कहता है, परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा... मसीह ने उस प्रगट किया" - एक्साजेसिस, "उसे परदे के पीछे से निकालो और प्रगट करो।" उसका स्वभाव ऐसा ही दिखता है। परमेश्वर का उद्देश्य कभी नहीं बदला। उसे "प्रमान सिक्का" मिल गया - इब्रानियों अक्षरों के सात विलक्षण में से एक जो यीशु को बताता है। वह असल का "प्रमान सिक्का" है जो शरीर में लगा हुआ है..., वह नाप जिस से हर सिक्केको नापा जाये। परमेश्वर ने उसे शरीर में बनाया और - चाहे "परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा...", परदे के पीछे से यीशु ने उस हटाया, और शारीर में बताया की परमेश्वर होना कैसा होता है।

अब उन इफिसियों के लिये जिन में परमेश्वर की आत्मा निवास करती है और उन में जीवन की शक्ति का तत्व है - ताकी वे जान सकें की चाहे वह बूडा व्यक्ति बहार आया है या यीशु मसीह में नया मनुष्य, परमेश्वर ने उपहार प्रचारक कलिसीया को दिये जिन का कार्य यह नहीं की दान लें... सिद्ध पुरुषों

को मालिश करें... सामाजिक साहस करना, या खानसामा बनना या बैंक में काम करने वाला या नौकर या उसके आँसूँ पोंछने का तौलिया। उस ने उन उपहार प्रचारकों को कलिसीया को दिया "सिद्ध मनुष्यों को प्रचार के लिये पूर्ण बनाना... जब तक हम विश्वास की एकता तक नहीं पहुँचते" - जो की केवल "पूर्ण मनुष्य के ज्ञान" से होता है - इस पुस्तक से हम जानते हैं की कैसा लगता है जब तक "हम यीशु के नाप की पूर्णता के बराबर नहीं आ जाते।"

अब सार... मैं दो घण्टों तक इस बात पर प्रचार कर सकता हुँ की यीशु की तरह होना क्या मायने रखता है। मैं यहाँ पर कई बार कर चुका हुँ - दो घण्टों से अधिक समय तक। परन्तु यदी इस बात का कुछ सार है की मसीह की तरह होना कैसा लगता है तो वह यह है की वह जड से प्रारंम्भ होता है। यहाँ वह है जो, "परमेश्वर के बराबर होना चोरी नहीः फिर भी अपने ऊपर नौकर का भेस डाला।" और आप यीसु के जीवन के बारे में पढिये - आप बैठ कर किसी भी इंजील को प्रारंम्भ से अंत तक पढिये - एक ही बात सामने आयेगी। उस ने इस जीवन के साथ इस तरह का व्यवहार किया के जैसे जीने का एक ही कारम हैः की वह अपने पिता की इच्छा को पूर कर सके जिस ने उसे भेजा है। हर अधिकार, हर स्वभाविक बल जो उस के साथ बराबरी करता वह उसे हटा देता था।

जब वह लडका था, तो उसके माता पिता ने उस पर अधिकार जमाना चाहा, तो वह कहता है, "क्या तुम नहीं जानते की मुझे वह करना है जिस के लिये मुझे मेरे पिता ने भेजा है?" जब वह उसकी पुकार को पूरा करने लगा, तो उसके परिवार ने सोचा की शायद वह आपे से बहार हो गया है। उसकी माँ की उमीदों को बखेर दिया है, उस ने कहा, "मेरे रिश्तेदार वही हैं जो मेरे पिता की इच्छा को पूरा करते हैं।" यह बात उसको एक घूँसे की तरह लगी होगा। जैसे ही उसके चेले उसके चारों ओर जमा होने लगे - उन्हें पता चल गया की परमेश्वर का राज कैसा होगा - जो उसके सब से करीब था उस से उस ने कहा, "शैतान मेरे पास से हट जा... तू एक मनुष्य की तरह बोलता है।"

आंत में उसे अपनी ही आत्मा से लडना पडा। मैं वह बता चुका हुँ; पूरा होने से पहले, कलवरी सीद्धांत में सच बन गयी। उस बागीचे में जब उसने प्रार्थना करी, और जब उसकी नस फटी और उसके माते का पसीना खून बन कर टपका जासे की उसने कहा...

- और मुझे लगा की मैंने यह कहा है और मैं इसे मानता हुँ, और मुझे यकीन है की ऐसा मैं अपने जीवन में हजारों बार कर चुका हुँ; मैंने इस तरह कभी नहीं कहा जैसा की पिछले तीन दिनों से कह रहा हुँः "पिता यदी हो सके तो यह प्याला मुझ से दूर कर दे" - क्यों की और भी कई चीजें हैं जो मुझे चाहिये। एक साह पहले बहुत सी चीजें थीं जो मुझे चाहिये थी। अब क्योंकी परमेस्वर मेरे साथ है मुझे और कुछ नहीं चाहिये। परन्तु थोडी चीजें ऐसी हैं जिन का मुजे पता है की यदी मैं परमेश्वर से कहूँ तो वह मुझे देगा। पर अब मुझे यह समझ में आ गया है की मुझे उसे सब कुछ दे देना है। यदी मैं लगाम को अपने हाथों में रखूँ तो उसका मकसद बेकार हो जायेगा। उसकी छवी और मेरी इच्छा का मिश्रण हो जायेगा। आज मैं यह नहीं कह सकता की सब ठीक हो गया है, परन्तु मैं यह कहना चाहता हुँ की सब ठीक हो रहा है।

यीशु कभी मेरी तरह या आप की तरह डगमगाया नहीं। उसने पसीना बहा कर सब ठीक किया: "यदी हो सके तो यह प्याला मुझ से दूर कर दे" आप जानते हैं की हम ने क्रूस के बारे में गुड फ्राईडे (अच्छा शुक्रवार) के दिन बात करी थी; उसे "बैड फ्राईडे" (बुरा शुक्रवार) कहना चाहिये। उस ने जो भुगता है उसी की सच्चाई को हम ने कम कर दिया हैऔर मुजे नहीं लगता की देह और खून इस बात को समझ पायेंगे जो इब्रानियों की पुस्तक में कहा है, "कहा और शून्य से संसार बन गया।" वह सूली पर लटक कर और ताने सुन कर भी कहता है की "पिता, उन्हें क्षमा कर, क्योंकी वे नहीं जानते की वे क्या कर रहे हैं।" महिमा का राजा उस दिन मेरे और तुम्हारे लिये मरा; परन्तु जब वह उस बागीचे में लड रहा था तो उस ने भी हमारी ही तरह मनुष्य की इच्छा का चोगा पहने था। -

... उसने कहा, "मेरी इच्छा नहीं, बरन तेरी इच्छा पूरी हो।"

उस बूडी निर्बुद्धि भेज के सिर पर मारो और बचाव करने के बजाये मिट्टी बन जाओ। "सिद्धांत" नहीं बदलेगा। परमेश्वर समझोता नहीं करता है और वह एकीकरण नहीं करता है; कोई सौदा भी नहीं। और वह बता चुका है की उसकी योजना क्या है। उसकी दिलचस्पि "जेनी के लडकों" के झुण्ड में नहीं है; उसे "छोटे मसीह" चाहिये। आप का काम काज, आप की शादी, आप का परिवार, आप जिस में भी फँसे हुए हैं, वह प्रभु का काम है और उस में परमेश्वर आप के साथ है। परन्तु, सब से पहले, परमेश्वर चाहता है की हमारे जीवन की हर परिस्थिती में उसे अवसर दें की वह अपनी छवी को ऊभार सके।

यह मुझे तीसरे शब्द की ओर ले जाता है: "क्रिया"। क्रिया क्या है? मेरा कहने का यह मतलब है की जब मैंने यह मान लिया की परमेश्वर ही मालिक है, मैं उसका मकसद भी समझ गया हुँ की वह मुझे यीशु की तरह बनाना चाहता है... तो क्या मैं उत्पादक बनूँगा! मैं उन्हें बताऊँगा की मुझे यीशु की तरह कैसे बनाना है; और वह सब बिगाड देता है क्योंकी वह मुझे पकड कर चक्के पर फैंक देता है और वह चामू हो जाता है मुजे यह पसन्द नहीं। यह मेरा आकार बिगाड देगा। और यहाँ अपने चक्के पर बैठ कर मैं कुम्हार के सिद्धांत को ललकारता हुँ और ग्रहसामग्री के बारे में - या उसकी कमी के बारे में..., रफतार के बारे में..., दिशा के बारे में..., कोण के बारे में शिकायत करता हुँ। चक्का तुम से कुछ कम या अधिक नहीं है - वह तुम्हारी परिस्थिती है। यह रोमियों ८ का दूसरे भाग का अर्थ है है: "परमेश्वर हर वस्तु में प्रवेश करता है और उन में अपनी अच्छाई का कार्य करता है।"

मैं सच में विश्वास करता हुँ - यदी मैंने जो पिछले दिनों दर्द अनुभव किया है, उसका आत्मिक रूप दूँ तो, परमेश्वर ने उस में प्रवेश किया है ताकी वह अपने लिये उससे काम करवा सके। वह जानता है की वह क्या बात है जिस से मैं अपने आकार में आ सकता हुँ और वह मुझ पर कार्य कर सकता है। और मैंने कई वर्षों से प्रचार किया है उस पर मैं विश्वास करता हुँ की: यदी आप परमेश्वर की इच्छा

चाहते हैं - सच में चाहते हैं; तो उससे बाहर निकलना उतना मुशकिल नहीं जितना उस में टिके रहना है।

कई लोग परमेश्वर की इच्छा जानने के लिये सुबह से लेकर रात तक परेशानन रहते हैं। यदी आप निश्चित ना हों तो, कदम मत बडाईये। आप जहाँ हैं वहीं रहीये, क्योंकी परमेश्वर अनिश्चितता में लेकर नहीं चलता। परमेश्वर का वचन कहता है, "सिद्ध पुरुष के कदम परमेश्वर की ओर से होते हैं।" परमेश्वर लुका छुपी नहीं खेल रहा। वह क्रूर व्यवहार नहीं करता। उसने अपने पुत्र को इसलिये नहीं भेजा की वह हमें खोई हुई भेड की नाई ढूँढे और फिर उसके बाद हम से छुप जाये।

यदी आप अपना जीवन और मैं मेरा जीवन परमेश्वर के हातों में सौंपता हुँ, तो वह मार्ग दर्शन करेगा। हमारी समस्या यह है की हम उसके पास आये हैं और अचानक हमें वह मार्ग पसन्द नहीं आता; या हम लडखडा जाते हैं और सब गडबड कर देते हैं और जब उस का हाथ हमें सीधा करने को आता है, तो हमें यह पसन्द नहीं आता। चक्का हमारी वह परिस्थिती है जब परमेश्वर प्रवेश करता है ... जैसे की कुम्हार का हाथ, ताकी हम पर कार्य कर सके।

पतरस ने यही सिखाया। उसने कुम्हार के घर के बारे में नहीं कहा, परन्तु वह एसाया के बिखरे हुए मसीहों से यही कह रहा है। परमेश्वर जानता है की हमें कैसे आकार में लाया जाये। कुम्हार जानता है की किस रफतार से चक्के को घुमाना चाहिये... उसे वह कोण भी पता है... वह यह भी जानता है की मिट्टी को कहाँ रखा जाये। वह यह भी जानता है की मिट्टी को चक्के पर कहाँ रखा जाये ताकी उस के हाथ से आकार दिया जाये। मैंने उन को देखा है; वह जब चक्के पर काम करता होता है तो वह अपना ध्यान भटकने नहीं देता, वह उस पर केंद्रित रखता है, और उसे तेज गुमाता है तो कभी धीमा करता है, और मिट्टी को उस पर डालता है।

पतरस ने भी उन बिखरे हिए मसीहों को भी यही कहा ता। उस ने यह नहीं कहा कीः यदी तुम प्रार्थना करोगे तो, या जाओ उस प्रचारक को सुनो; या यह पुस्तक पढो; या सडक के उस कोने पर यह पुस्तक की दुकान है वहाँ जाओ तुम्हें वह पुस्तक मिलेगी जो तुम्हें इस तनाव से मुक्त करेगी। उसने कहा परमेश्वर की स्तूती करो, आप का जीवन कुछ बातों को दिखाये; और यह तनाव के द्वारा परमेश्वर तुम्हारे स्वभाव के उस भाग को निकालेगा जिसे हटा देना है। और यदी तुम में तनाव नहीं है तो तुम नहीं देख पाओगे। आप यह नहीं जान पायेंगे की आप में विश्वास नहीं है जब तक आप को विश्वास के तनाव में न डाला जाये। आप नहीं जानते की आप कितने पागल हो सकते हैं जब तक की आप को पागल न बनाया जासे ताकी आप अपने इस स्वभाव को बदल लें।

मुझे गृह सामग्री पसन्द नहीं। यदी आप जानना चाहते हैं की पिचले दो सप्ताह से परमेश्वर ने मुझे जिस चाक पर रखा है उसके साथ मैं क्या करना चाहता हुँ तो मैं आप को बता दूँ की मैं दो धारी कुलहाडी की तलाश में हुँ ताकी उस पर चला सकूँ। कई बार मैं उस पईये को पत्थर तोडने वाला यंत्र ले कर उसे चकनाचूर करना चाहता हुँ, यदी परमेश्वर मुझे मेरी इच्छा पूरी करने दे तो। उस पर टिके रहीये। चाक पर हमला मत करीये।

जो हाथ आप पर कार्य कर रहा है उसे स्वीकार करीये। तनाव से अपनी दृष्टि को हटा लीजीये - चकमा देना छोड दीजीये; घूँसा मारना छोड दीजीये; बचाव करना छोड दीजीये; क्योंकी परमेश्वर चाहता है की हम मिट्टी की तरह बनें। समानता से समस्या यह है की हम मिट्टी नहीं हैं - हमारे पास अपनी पसन्द है। लडाई छोड दें और उसे अपना काम करने दें।

इच्छा और क्रम के बारे में जो अंतिम बात मैं बताना चाहता हुँ वह नये नियम में है। मैं नहीं जानता की इसे कैसे समझाऊँ, परन्तु मैंने एक कुम्हार को देखा है। मुझे नहीं पता की मैंने ऐसा कोई काम देखा है - किसी ललित कला में निपुण व्यक्ति भी अपने कार्य पर उतना केंद्रित नहीं होगा जितना की कुम्हार जो चाक पर काम कर रहा है और उस एक घडे के बना रहा है। वह उस पर अन्नय ध्यान देता है।

जब हम परमेश्वर के साथ काम करते हैं तो यहाँ पर समानता बिकर जाती है। मैं नहीं जानता की कैसे समझाऊँ; मैं यीशु के शब्दों को लेता हुँ। "तुम्हारे सिर के बाल गिने हुए हैं।" वह "गौरईये को गिरते हुए देखता है।" और परमेश्वर के सर्वज्ञान और शक्ति में, यदी शब्दों से आज कह पाता, आप में से कुछ लोग जो चाक पर हैं जो आप के आकार को बिगाड रहा है आप आशा रख सकते हैं। परमेश्वर में यह योग्यता है; उस में न केवल है, परन्तु वह कर भी रहा है... ताकी हम में से हर एक जन वह केंद्र पा सकें जो की उस कुम्हार का है जो उस घडे पर केंद्रित है।

शैतान ने मेरे कानों में कहा है। मैंने उद्दम्डता से कहा, "परमेश्वर मेरी सहायता करें!" उस में से अधिकतर शारीरिक आवाज थी, "मेरे मार्ग में मेरी साहायता करें," परन्तु मुझे अब समझ में आया है जो मैं अपने जीवन भर जानता था परन्तु प्रत्यक्ष नहीं कर पाया - मैं परमेश्वर के हाथों में हुँ। और आप भी परमेश्वर के हाथों में हैं।

मैं वह भजन सुना सकता हुँ जो मैं हजारों बार कह चुका हुँ, परन्तु आज यह मेरे लिये और आप के लिये सच है। "परमेश्वर तू मेरा उटना और बैठना जानता है, तू मेरे विचारों को जानता है।" मैं उन्हें शब्दों डाल ही नहीं पाता हुँ, तू जान लेता है। "यदी मैं पंख लगा कर समुद्र के छोर पर उड जाऊँ तो तू वहाँ भी है। यदी मैं अपना बिछोना नरक में डालूँ, तो तू वहाँ भी है। यदी मैं कहूँ की यह अंधकार मुझे धाँप लेगा, तो रात भी मुझे दिन सी लगेगी।" वह आर पार देख सकता है, मैं चाहे देख सकूँ या नहीं। और जैसा की मैंने कहा - जैसे जैसे मुझे अनुभव होते जाते हैं मैं और अधिक सीखता जाता हुँ, जो वचन प्रचार किया गया वह सच है। जैसा मैंने कहा, "जो परमेश्वर ने दिन में कहा है उस पर रात में सक मत करो।"

और परमेश्वर का वचन कहता है - और मैं इस पर टिका हुआ हुँ, "वह हम को हमारी क्षमता से अधिक परिक्षा में नहीं डालताः परन्तु इस परिक्षा से मुक्ति पाने का मार्ग दिखाता है।" यूनानी बी यही मानते हैं की जितना आप की परिक्षा सच्ची है - उतना ही, परमेश्वर ने बचने का मर्ग बना रखा है और दरवाजे में चाबी को डाल रखा है। उस ने लेगों के लिये बचाव के मार्ग बना रखे हैं क्योंकी उसकी

विभिन्नता ऐसी है की वह तुम पर कारय करता है और मुझ पर भी कार्य करता है, वह चाक - जो हम पर दबाव डाल रहा है... उस के पास जवाब है।

मैं नहीं जानता की आप की क्या समस्या है। मैं जानता हुँ की मेरी क्या है। मेरे जवाब क्या हैं, मैं यह भी जानता हुँ, परन्तु जैसे वह मुझे चाक पर गोल घुमा रहा है तो मैं इस बात पर आ रहा हुँ - उसकी इच्छा। उसकी उँगली उसकी इच्छा को पूरा करेगी।

अब मैं अंत करता हुँ। मैंने कहा की एक अंतिम शब्द हैः "व्यक्ति"। पुराने नियम के कुम्हार के घर का चित्र कुछ कठिन है। यदी वह उस घडे को यही आकार नहीं दे सकता तो वह फैंक दिया जाता है।

यीसु ने यहूदा को "दोस्त" कहा, जब वह उनको धोखा देने आता है - यह मुझे हैरान करता है। सच्चाई जानने के बाद की उस ने उसके साथ क्या किया है वह अपने आप को उस नष्ट से बचाना चाहता है। वह उन याजकों के पास बापस जाता है और पवित्रशास्त्र हमें बताता है की वह अपने साथ ३० चाँदी के सिक्कों को भी ले कर जाता है, जो यीशु के जीवन का दाम बताते हैं - वह दाम जिस पर उस ने यीशु के बेचा, यह नहीं जानते हुए की वह मुक्ति पाने जा रहा था, और वह उन को जमीन पर फैंक देता है।

कहानी बताती है - और इंजील में कुम्हार के घर का यह अंतिम वर्णन है, कहानी बताती है की वे उस पैसे को उठाते हैं और उससे एक कुम्हार का खेत खरीदते हैं। मुझे नहीं लगता की यह एक दुर्घटना थी जिसे परमेश्वर नियंतेरण में इस तरह से कर सकते थे की यीशु के जीवन का दाम जिस से मुक्ति मिली वह उस खेत को खरीदने में इसतेमाल हुआ जहाँ पर टूटे हुए और बेकार घडे फैंके जाते थे - परमेश्वर के साथ रिश्ते का टूटना दर्शाता है..., वे सब वहाँ पर दफनाये हुए थे।

यीशु के जीवन का दाम...। यहाँ पर परमेश्वर जानबूज कर एक बात बताना चाहता है, "आप के पास एक और मौका है।" यह पुराने नियम के न मुडने वाले ढाँचे की तरह नहीं है। यीशु के जीवन के दाम से पूरा खेत खरीदा गया, यदी आप चाहें तो मत्ती १३ पढिये जहाँ पर लिखा है, "परमेश्वर ने सारे खेत का दाम चुकाया ताकी वह उस खेत में छुपे खजाने को पा सके।" जब मैं देखता हुँ की परमेश्वर उन वर्षों में मुझे कहाँ ले गया और मुझे क्या सिखाया, मैंने परमेश्वर के प्रति इस से अधिक योग्य इससे पहले कभी अनुभव नहीं कीया। परमेश्वर के लिये इतनी श्रमता से कार्य करने का एक कारण अयोग्यता का अनुभव है। परन्तु यह मुझे एक निश्चय कराता है - परमेश्वर बिगडे बर्तनों का प्रयोग करता है; और जो आज मुझे सुन रहा है उन के लिये यीसु के जीवन का दाम ..., यदी परमेश्व की आत्मा ने प्रवेश किया है।

और जैसा की मैंने इस उपदेश के प्रारंम्भ में कहा था- और यह कहने का अच्छा समय है - यूनानी में "छेदना" के लिये दो अच्छे शब्द हैं। एक यूनानी शब्द उस समय प्रयोग हुआ जब एक रोमी सैनिक ने यीसु को तल्वार से झेदा। यह वही शब्द नहीं है जो की प्रेरितों के काम २ में प्रयोग किया गया है जब पतरस कहता है "जब वे जा रहे थे" तो यह हुआः "उनके हृदयों पर तीर चला" (यूनानी में औप

गहराई से छेदना)। परमेश्वर का वचन पवित्रात्मा से अभिषिक्त हो कर यीसु को जिस तलवार से भेदा गया, उससे भी अधिक गहराई से भेदा गया। जब इस तरह से परमेश्वर का वचन भेदा जाता है, कई लोग यह जान जाते हैं की उन्होंने कुम्हार के रूप में परमेश्वर के कार्य में सहयोग नहीं दिया है।

उस ने वह सारा खेत खरीदा जिस में बिगडे, टूटे, बेकार बर्तन थे। तो आप क्यों नहीं वापस लौट कर उसे कार्य करने देते? मैं तुम्हें बता दूँ की शर्तें नहीं बदलेंगी। वह अभी भी मालिक ही रहेगा। वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करेगा। यह नहीं बदला है। वह वही क्रिया का प्रयोग करेगा, और इस बार भी दुख होगा और चाक पर छीक से नहीं बैठ पाओगे। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद दीजीये की आप दुबारा प्रारंम्भ कर सकते हैं। हर बेकार बर्तन जो आज यहाँ पर है, हर बेकार बर्तन जो मुझे सुन रहा है, यदी आप चाहें तो मालिक कुम्हार फिर से कार्य कर सकता है।

परमेश्वर अभी भी आप के पादरी पर कार्य कर रहा है। उस को प्रार्थना करना प्रचार करने से अधिक आसान लगता है, परन्तु परमेश्वर मुझे यहाँ पर उपदेश देने लायक नहीं बनाता यदी यहाँ पर ऐसे बर्तन नहीं होते जो चाक को लात नहीं मार रहे होते, और कुछ ऐसे बर्तन जो सीदा होना चाहते हैं और जो पहचानना चाहते हैं की कौन मालिक है और उसकी क्रिया के प्रती स्वंय को सौंप दें।

यदी आप ने पिछले सप्ताह दूर दर्शन देखा होगा तो आप ने सुना होगा की मैंने कहा था की, चार्ल्स जी. फिन्ने ने एक बार कहा था की परमेश्वर के वचन का केवल प्रचार करना और लागू नहीं करना गलत है। आज यहाँ पर हम सब मिट्टी के ढेर हैं। हम सब की अभिलाषायें हैं; हम सब की आवश्यक्तायें हैं; हम सब की इच्चायें हैं; हम सब के अपने कार्य हैं, परन्तु जो सब से मुख्य बात है: क्या हम इस बात के लिये तैसार हैं की जो परमेश्वर चाहता है वह पूरा हो?

मैंने पिछले सप्ताह इस बात पर अंत किया था की मुझे इस कलीसीया की आवश्यक्ता है और मैं चाहता हुँ की यह पादरी वह स्थान बने जहाँ पर पवित्रात्मा आकर विश्राम कर सके। आज मैं यह कहता हुँ की यह पादरी और यह कलीसीया वह स्थान बने जहाँ पर परमेश्वर कुछ मिट्टी पा सके जिस पर वह अपना कार्य कर सके। यदी ७५ मोरवी संसार को हिला सकते हैं और नियम के अनुसार हमेशा कार्य करने वाला (मैथोडिस्ट) आनदोलन ला सकते हैं, और मुक्ति की सेना (सालवेशन आर्मी) की स्थापना कर सकते हैं, तो आप क्या समझते हैं की यदी हम अपने आप को उसे सौंप दें तो परमेश्वर हमारे साथ क्या कर सकता है - बिगडे और टूटे बर्तन, वापस कुम्हार के पास?

अधिकार © २००७, पादरी मैलिसा स्काट - सारे अधिकार सुरक्षित

Copyright (c) 2007, Pastor Melissa Scott - all rights reserved